

इलायजा - नंबर ग्यारह

पहली गलती

Jeff Pippenger

2023-10-15

प्राचीन इस्राएल के प्रारंभ में हारून के सोने के बछड़े का विद्रोह, भविष्यवाणी की दृष्टि से इफ्रैम के उत्तरी राज्य के दस कबीलों के प्रारंभ में यारोबाम के विद्रोह के साथ मेल खाता है। ये पवित्र इतिहास 1863 में एडवेंटावाद के विद्रोह के प्रतीक हैं।

निस्संदेह 1863 के बारे में अन्य साक्ष्य भी हैं, लेकिन हारून और राजा यारोबाम ऐसे साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं जो 1863 के इतिहास पर अध्यारोपित होते हैं, और वे सभी इतिहास एक लाख चवालीस हजार के आंदोलन को दर्शाते हैं, जो प्रोटेस्टेंट सींग है, केवल बाइबिल-भविष्यवाणी के छठे राज्य के अंतिम दिनों में ही नहीं, बल्कि अनुग्रहकाल की समाप्ति तक। वे इतिहास छठे राज्य में गणतंत्रीय सींग के समानांतर इतिहास पर भी प्रकाश डालते हैं।

यह सामान्यतः उनके लिए एक बहुत कठिन सत्य है जो यह मानते हैं कि दुनिया के अंत में सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट कलीसिया परमेश्वर के शेष लोग हैं। वह विश्वास हमारी पहली गलती है। इस बात का कोई बाइबिलीय प्रमाण नहीं है कि लाओदीकिया की कलीसिया उन लोगों का प्रतिनिधित्व करती है जिन्हें रविवार के कानून के संकट के समय ध्वज की तरह ऊँचा उठाया जाएगा। हमारी पहली गलती इस झूठे आधार को स्वीकार कर लेना है कि ऐसा ही है। दुनिया के अंत में ध्वज के रूप में ऊपर उठाए जाने वाले लोग वही होंगे जिन्हें शैतान की सभा के सदस्यों ने निकाल बाहर किया था।

और वह जातियों के लिए एक ध्वज खड़ा करेगा, और इस्राएल के निकाले हुएों को इकट्ठा करेगा, और पृथ्वी के चारों कोनों से यहूदा के बिखरे हुएों को एकत्र करेगा। यशायाह 11:12.

ध्वजवाहक बनने वालों को बाहर निकालने वाले लाओदीकियाई एडवेंटिस्ट ही हैं।

हे वे जो उसके वचन से काँपते हो, प्रभु का वचन सुनो; तुम्हारे वे भाई जिन्होंने तुमसे घृणा की और मेरे नाम के कारण तुम्हें बाहर निकाल दिया, कहते हैं, 'प्रभु की महिमा हो'; परन्तु वह तुम्हारे आनन्द के लिए प्रगट होगा, और वे लज्जित होंगे। यशायाह 66:5.

जो ध्वजवाहक हैं, वे मसीह के 'नाम' के कारण बाहर निकाल दिए जाते हैं। जो नाम घृणा उत्पन्न करता है वह 'अल्फा और ओमेगा' है, क्योंकि 'अल्फा और ओमेगा' का सिद्धांत यही स्पष्ट करता है कि बाइबल की भविष्यवाणी में सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट कलीसिया किसका प्रतिनिधित्व करती है। दस कुँवारियों का दृष्टांत एडवेंटावाद का प्रतिनिधित्व करता है।

"मत्ती 25 में दस कुँवारियों का दृष्टान्त भी एडवेंटिस्ट लोगों के अनुभव को दर्शाता है।" महान संघर्ष, 393.

यह दृष्टान्त एडवेंटिज़्म की शुरुआत में पूरा हुआ था, और अंत में यह फिर अक्षरशः पूरा होता है।

मेरा ध्यान अक्सर 'दस कुँवारियों का दृष्टान्त' की ओर दिलाया जाता है, जिनमें से पाँच बुद्धिमान थीं और पाँच मूर्ख। यह दृष्टान्त अक्षरशः पूरा हुआ है और होगा, क्योंकि इसका इस समय के लिए विशेष अनुप्रयोग है; और तीसरे स्वर्गदूत के संदेश के समान, यह पूरा हो चुका है और समय के अंत तक वर्तमान सत्य बना रहेगा। रिव्यू एंड हेराल्ड, 19 अगस्त, 1890.

जो मूर्ख कन्याएँ जागकर यह समझती हैं कि उनके पास तेल नहीं है, वे लाओदीकिया के लोग हैं।

"मूर्ख कुँवारियों द्वारा प्रतिनिधित्व की गई कलीसिया की अवस्था को लाओदीकियाई अवस्था भी कहा जाता है।"
रिव्यू एंड हेराल्ड, 19 अगस्त, 1890.

बुद्धिमान कुँवारियाँ, जिन्हें फिलाडेल्फिया की कलीसिया के रूप में भी दर्शाया गया है, उनका संघर्ष उस कलीसिया से है जिसके लोग अपने को यहूदी कहते हैं, पर हैं नहीं।

देख, मैं शैतान की सभा के उन लोगों को, जो कहते हैं कि वे यहूदी हैं, पर हैं नहीं, बल्कि झूठ बोलते हैं; देख, मैं उन्हें ऐसा करूँगा कि वे आकर तेरे पाँवों के आगे दण्डवत करें, और यह जान लें कि मैंने तुझ से प्रेम किया है।
प्रकाशितवाक्य 3:9.

बहन व्हाइट महान निराशा के बाद के पहले ही प्रकाशन में इस पद पर टिप्पणी करती हैं।

आप सोचते हैं कि जो संत के चरणों के आगे आराधना करते हैं (प्रकाशित वाक्य 3:9), वे अंत में उद्धार पाएँगे। यहाँ मुझे आपसे असहमति करनी होगी; क्योंकि परमेश्वर ने मुझे दिखाया कि यह वर्ग स्वयं को एडवेंटिस्ट कहने वाले लोग थे, जो गिर गए थे, और 'उन्होंने अपने लिए परमेश्वर के पुत्र को फिर से क्रूस पर चढ़ाया, और उसे खुली लज्जा में डाल दिया।' और 'परीक्षा की घड़ी' में, जो अभी आनी है, ताकि हर एक का सच्चा चरित्र प्रकट हो, वे जानेंगे कि वे सदा के लिए खो गए हैं; और आत्मा के क्लेश से अभिभूत होकर, वे संत के चरणों पर झुकेंगे। छोटे झुंड के लिए वचन, 12.

यशायाह के पाँचवें अध्याय में 'दाख की बारी का गीत', जिसका उपयोग मसीह ने बाद में किया, पहली बार उल्लिखित है।

अब मैं अपने प्रिय के लिये उसकी दाख की बारी के विषय में अपने प्रिय का एक गीत गाऊँगा। मेरे प्रिय की एक दाख की बारी एक अत्यन्त उपजाऊ पहाड़ी पर थी। उसने उसके चारों ओर बाड़ लगाई, उसमें से पत्थर चुनकर निकाल दिए, और उसमें सबसे उत्तम बेल लगाई; उसके बीच में एक मीनार बनाई, और उसमें रस-कुंड भी बनाया; और उसने आशा की कि वह अंगूर लाएगी, परन्तु उसने जंगली अंगूर उत्पन्न किए। और अब, हे यरूशलेम के निवासियों और यहूदा के पुरुषों, मैं तुमसे विनती करता हूँ, मेरे और मेरी दाख की बारी के बीच न्याय करो। मेरी दाख की बारी के लिये और क्या किया जा सकता था जो मैंने उसमें नहीं किया? फिर जब मैंने यह आशा की कि वह अंगूर लाएगी, तो उसने जंगली अंगूर क्यों उत्पन्न किए? यशायाह 5:1-4.

पुराने नियम हो या नया, दृष्टान्त यह दर्शाता है कि जिन फलों को लाने के लिए उसे स्थापित किया गया था, उन्हें लाने से इनकार करने के कारण परमेश्वर की कलीसिया परमेश्वर द्वारा अस्वीकृत कर दी गई है। यशायाह पाँच में, दृष्टान्त के अंत में, दाख की बारी के दण्ड का उल्लेख किया गया है, और साथ ही जातियों के लिए एक ध्वज उठाने का वचन भी दिया गया है। स्पष्ट है कि दाख की बारी ध्वज नहीं है।

अतएव उसके लोगों के विरुद्ध प्रभु का क्रोध भड़क उठा; उसने अपना हाथ उनके विरुद्ध बढ़ाया और उन पर प्रहार किया; और पहाड़ियाँ काँप उठीं, और उनके शव सड़कों के बीच फटे पड़े थे। तौभी इस सब के बावजूद भी उसका क्रोध नहीं फिरा, पर उसका हाथ अब भी बढ़ा हुआ है। और वह दूर देश की जातियों के लिये एक ध्वज उठाएगा, और पृथ्वी के छोर से उन्हें सीटी बजाकर बुलाएगा; और देखो, वे फुर्ती से शीघ्र ही आ पहुँचेंगे। यशायाह 5:25, 26.

जब यीशु ने बाद में उस गीत को एक दृष्टान्त के रूप में गाया, तो उनका निष्कर्ष भी उतना ही निर्णायक था।

एक और दृष्टान्त सुनो: एक गृहस्वामी था, जिसने एक दाख की बारी लगाई, उसके चारों ओर बाड़ लगाई, उसमें रसकुंड खोदा, एक मीनार बनाई, और उसे बागवानों को किराए पर दे दिया, और दूर देश चला गया। और जब फल का समय निकट आया, तो उसने अपने दासों को बागवानों के पास भेजा कि वे उसके फल ले आएँ। पर बागवानों ने उसके दासों को पकड़ लिया: एक को पीटा, दूसरे को मार डाला, और तीसरे को पत्थरों से मार डाला। फिर उसने पहले से अधिक अन्य दास भेजे; और उन्होंने उनके साथ भी वैसा ही किया। परन्तु अंत में उसने अपने

पुत्र को उनके पास भेजा, यह कहकर, वे मेरे पुत्र का आदर करेंगे। पर जब बागवानों ने पुत्र को देखा, तो आपस में कहा, यह वारिस है; आओ, इसे मार डालें और इसकी विरासत पर कब्ज़ा कर लें। तब उन्होंने उसे पकड़ लिया, दाख की बारी से बाहर निकाल दिया, और उसे मार डाला। जब उस दाख की बारी का स्वामी आएगा, तो वह उन बागवानों के साथ क्या करेगा? उन्होंने उससे कहा, वह उन दुष्टों को बुरी तरह नाश कर देगा, और अपनी दाख की बारी दूसरे बागवानों को दे देगा, जो अपने समय पर उसे उसके फल देंगे। यीशु ने उनसे कहा, क्या तुमने पवित्र शास्त्रों में कभी नहीं पढ़ा, 'जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने निकम्मा ठहराया, वही कोने का सिरा बन गया; यह प्रभु की ओर से हुआ, और यह हमारी आँखों में अद्भुत है'? इसलिए मैं तुम से कहता हूँ, परमेश्वर का राज्य तुम से ले लिया जाएगा और एक ऐसी जाति को दिया जाएगा जो उसके फल उत्पन्न करेगी। और जो कोई इस पत्थर पर गिरेगा, वह टूट जाएगा; पर जिस पर वह गिरेगा, उसे पीस कर चूर कर देगा। और जब महायाजकों और फरीसियों ने उसके दृष्टान्त सुने, तो उन्होंने समझ लिया कि वह उन्हीं के विषय में कह रहा है। मत्ती 21:33-45.

लाओदीकिया की सातवें-दिन एडवेंटिस्ट कलीसिया वह पताका नहीं है जो ऊँची उठाई जाती है। अंतिम दिनों की वह दाख की बारी, जिसका प्रतिरूप प्राचीन इस्राएल में मिलता है, लाओदीकिया की सातवें-दिन एडवेंटिस्ट कलीसिया ही है; परन्तु एक ऐसा राष्ट्र होगा जो ऐसा फल उत्पन्न करेगा जो 'पहिलौठे फल' ठहरने के योग्य हो; और जो 'पहिलौठे फल' हैं, वही एक लाख चवालीस हज़ार हैं।

ये वे हैं जिन्होंने स्त्रियों के साथ अपने आप को अशुद्ध नहीं किया, क्योंकि वे कुँवारे हैं। ये वे हैं जो जहाँ कहीं मेम्ना जाता है, उसके पीछे-पीछे चलते हैं। ये मनुष्यों में से छुड़ाए गए हैं, और ये परमेश्वर और मेम्ने के लिये प्रथम फल हैं। प्रकाशितवाक्य 14:4.

पताका के रूप में गृहस्वामी द्वारा उन्हें अंतिम कटनी लाने के लिए नियोजित किया जाएगा। लाओदीकिया की सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट कलीसिया वह दाख की बारी है जिसने मूसा के 'सात बार' की आधारशिला को अस्वीकार कर दिया। उस बिंदु से आगे यह लगातार और भी गहरे अंधकार में उतरता गया। वह पताका 'यिशै की जड़' होगी। यिशै की जड़, अर्थात् दाऊद, उस अंतिम सत्य का प्रतिनिधित्व करती है जिसे यीशु ने अपने इतिहास में कुतर्क करने वाले यहूदियों के समक्ष प्रस्तुत किया था। यह 'अल्फा और ओमेगा' के सिद्धांत का प्रतीक है, जिसे प्राचीन और आधुनिक दोनों इस्राएल के अविश्वासी दाखबान समझने से इनकार करते हैं।

और उस दिन यिशै की एक जड़ होगी, जो लोगों के लिये ध्वज के समान खड़ी होगी; उसी की खोज अन्यजातियाँ करेंगी; और उसका विश्राम महिमामय होगा। यशायाह 11:10।

बहन व्हाइट और जेम्स व्हाइट स्पष्ट रूप से बताते हैं कि 1856 तक यह आंदोलन लाओदिकिया की अवस्था में आ चुका था; तो वह कब यह बताती हैं कि इसने कभी लाओदिकियों के लिए संदेश स्वीकार किया? वह कभी नहीं बतातीं। हमारी पहली भूल यह मान लेना है कि सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट कलीसिया अपने इतिहास के दौरान एक विजयी कलीसिया रही है। वास्तविकता ठीक इसके विपरीत है। यदि हम उस पहली भूल पर सहमति कर लेते हैं, तो हमारी आँखें उन भविष्यवाणीय तथ्यों के प्रति बंद हो जाती हैं जो इसके विपरीत सिखाते हैं। उदाहरण के लिए, बहन व्हाइट बार-बार यह बताती हैं कि प्राचीन शाब्दिक इस्राएल का इतिहास आधुनिक आध्यात्मिक इस्राएल के अनुभव और इतिहास को दर्शाता है। अक्सर, जब वह आधुनिक इस्राएल के लिए उदाहरण के रूप में प्राचीन इस्राएल का संदर्भ देती हैं, तो साथ ही वह उसी तथ्य पर प्रेरित पौलुस के प्रसिद्ध कथन को उद्धृत करती हैं।

अब ये सब बातें उनके साथ उदाहरण स्वरूप हुईं; और वे हमारी चेतावनी के लिए लिखी गई हैं, जिन पर युगों का अंत आ पहुँचा है। 1 कुरिन्थियों 10:11.

प्रेरित पौलुस ग्यारहवें पद में पिछले दस पदों का सारांश प्रस्तुत कर रहे हैं।

और हे भाइयो, मैं नहीं चाहता कि तुम इससे अनजान रहो कि हमारे सब पूर्वज बादल के अधीन थे, और सब समुद्र के भीतर से होकर निकल गए; और सब ने बादल और समुद्र में मूसा में बपतिस्मा लिया; और सब ने वही

आत्मिक भोजन खाया; और सब ने वही आत्मिक पेय पिया; क्योंकि वे उस आत्मिक चट्टान से पीते थे जो उनके साथ-साथ चलती थी; और वह चट्टान मसीह थी। परन्तु उनमें से बहुतों से परमेश्वर प्रसन्न न था; क्योंकि वे जंगल में नष्ट कर दिए गए। अब ये बातें हमारे लिए उदाहरण बनीं, ताकि हम बुरी बातों की लालसा न करें, जैसे उन्होंने भी की। और न तुम मूर्तिपूजक बनो, जैसे उनमें से कुछ थे; जैसा लिखा है, 'लोग खाने-पीने के लिए बैठ गए, और क्रीड़ा करने को उठ खड़े हुए।' और न हम व्यभिचार करें, जैसे उनमें से कुछ ने किया, और एक ही दिन में तेईस हजार गिर पड़े। और न हम मसीह की परीक्षा लें, जैसे उनमें से कुछ ने भी ली, और वे साँपों से नष्ट कर दिए गए। और न तुम बड़बड़ाओ, जैसे उनमें से कुछ ने भी बड़बड़ाया, और वे विनाशक के द्वारा नाश किए गए। 1 कुरिन्थियों 10:1-10

पॉल और सिस्टर व्हाइट प्राचीन इस्राएल को विजयी और धर्मी लोगों के उदाहरण के रूप में नहीं प्रस्तुत करते। ठीक इसके विपरीत। पॉल ग्यारहवीं आयत में पहली दस आयतों का सार प्रस्तुत करते हैं, और फिर अगली आयत में यह बताते हैं कि प्राचीन इस्राएल का इतिहास देखने वालों को कौन-सी सीख पहुँचानी है।

अतः जो यह समझता है कि वह दृढ़ता से खड़ा है, वह सावधान रहे, कहीं वह गिर न पड़े। 1 कुरिन्थियों 10:12.

प्राचीन इस्राएल ऐसी प्रजा का उदाहरण है जिसे परमेश्वर ने बुलाया, परमेश्वर ने नेतृत्व किया, जिसने परमेश्वर की भविष्यवाणियों को पूरा किया, और हर कदम पर परमेश्वर के विरुद्ध बगावत भी की, तथा अंततः आकाश और पृथ्वी के सृष्टिकर्ता को क्रूस पर चढ़ा दिया! एडवेंटिस्टों को प्राचीन इस्राएल के बारे में इन तथ्यों को मानने में कोई दिक्कत नहीं होती, पर वे शायद ही कभी उस निहित चेतावनी को अपनी लाओदीकिया वाली अंधता को भेदकर स्वीकार करते हैं। वे उन पदों का उद्धरण दे सकते हैं जहाँ बहन व्हाइट कलीसिया को परमेश्वर की आँख की पुतली बताती हैं—और वह है भी—परंतु अपने लोगों के प्रति परमेश्वर का प्रेम उनकी वास्तविक दशा पर कोई परदा नहीं डालता। जिनसे वह प्रेम करता है, उन्हें वह डाँटता और ताड़ना देता है। भले ही परमेश्वर की कलीसिया परमेश्वर की आँख की पुतली है, यीशु ने उस पुतली—अपनी पुतली—के साथ अपने संबंध को बहुत साफ़ तौर पर बता दिया।

हे यरूशलेम, यरूशलेम, तू जो भविष्यवक्ताओं को मार डालता है, और जो तेरे पास भेजे गए हैं, उन पर पत्थराव करता है; मैं कितनी बार चाहता था कि मैं तेरे बच्चों को वैसे इकट्ठा करूँ, जैसे मुर्गी अपने चूजों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठा करती है, परन्तु तुमने नहीं चाहा! देखो, तुम्हारा घर तुम्हारे लिये उजाड़ छोड़ दिया गया है; और मैं तुम से सच कहता हूँ, तुम मुझे तब तक नहीं देखोगे, जब तक वह समय न आ जाए जब तुम कहोगे, 'धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है।' लूका 13:34, 35.

प्रश्न पूछे जाने चाहिए, "क्या यीशु सचमुच आरंभ के साथ अंत को दर्शाते हैं? क्या प्राचीन इस्राएल वास्तव में आधुनिक इस्राएल का चित्रण करता है?" प्राचीन इस्राएल की उनके पूरे इतिहास में समस्या यह थी कि वे मानते थे कि उनकी विरासत यह सिद्ध करती है कि वे परमेश्वर की प्रजा हैं, और इसलिए वे परमेश्वर की प्रजा के अलावा कुछ और ही नहीं सकते थे। इसी कारण यिर्मयाह के दिनों में वे अपने आपको प्रभु का मंदिर होने का दावा करते थे।

प्रभु की ओर से यिर्मयाह के पास यह वचन आया: प्रभु के घर के द्वार पर खड़े हो, और वहाँ यह वचन घोषित करो, और कहो, हे यहूदा के सब लोगों, जो प्रभु की उपासना करने के लिए इन द्वारों से प्रवेश करते हो, प्रभु का वचन सुनो। सेनाओं का प्रभु, इस्राएल का परमेश्वर, यूँ कहता है: अपनी चाल-चलन और अपने काम सुधारो, तब मैं तुम्हें इस स्थान में बसने दूँगा। यह कहते हुए झूठे वचनों पर भरोसा न करो, 'प्रभु का मन्दिर, प्रभु का मन्दिर, प्रभु का मन्दिर — ये ही हैं।' यिर्मयाह 7:1-4.

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने भी ठीक इसी भ्रांति पर जोर दिया था।

और वे अपने पापों को स्वीकार करते हुए उससे यर्दन में बपतिस्मा लेते थे। परन्तु जब उसने फरीसियों और सद्कियों में से बहुतों को अपने बपतिस्मा के लिये आते देखा, तो उनसे कहा, हे साँपों की संतानों, आने वाले क्रोध से भागने को तुम्हें किसने चेताया? इसलिए ऐसे फल लाओ जो पश्चात्ताप के योग्य हों; और अपने भीतर यह न सोचो कि हमारे पिता इब्राहीम हैं; क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ कि परमेश्वर इन पत्थरों से इब्राहीम के लिये संतान

उत्पन्न कर सकता है। और अब कुल्हाड़ा पेड़ों की जड़ पर रखा गया है; इसलिए हर वह पेड़ जो अच्छा फल नहीं लाता, काटा जाता है और आग में डाला जाता है। मत्ती 3:6-10.

एडवेंटवाद के भीतर वही भ्रमित समझ, जिसका प्रतीक "प्रभु का मंदिर, हम हैं" जैसी अभिव्यक्ति और यह विचार है कि हम अब्राहम की आध्यात्मिक "संतान" हैं, लाओदीकिया की अंधता की मुख्य अभिव्यक्ति है।

परमेश्वर अपने दूतों को भेजता है ताकि वे उसके लोगों को बताएँ कि उसकी धार्मिकता की आज्ञाओं का पालन करने के लिए उन्हें कैसा होना और क्या करना आवश्यक है; जिन्हें यदि कोई मनुष्य करे, तो वह उन्हीं के द्वारा जीवित रहेगा। उन्हें परमेश्वर से सर्वोपरि प्रेम करना है, उसके सिवा किसी अन्य देवता को न मानते हुए; और उन्हें अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करना है, उसके साथ वही करना है जो वे चाहते हैं कि वह उनके साथ करे।

परमेश्वर की पवित्र व्यवस्था का एक भी बिंदु हल्के में या अनादरपूर्वक नहीं लिया जाना चाहिए। जो लोग 'प्रभु यूँ कहता है' का उल्लंघन करते हैं, वे अंधकार के राजकुमार के झंडे के नीचे, अपने स्रष्टा और अपने उद्धारकर्ता के विरुद्ध विद्रोह में खड़े होते हैं। वे आज्ञाकारी को दी गई प्रतिज्ञाओं पर अपना अधिकार जताते हुए कहते हैं, 'प्रभु का मंदिर, प्रभु का मंदिर—हम हैं,' जबकि वे उसके चरित्र का गलत चित्र प्रस्तुत करके, और वही काम करके जिनसे उसने उन्हें मना किया है, परमेश्वर का अपमान करते हैं। वे ऐसा मानदंड खड़ा करते हैं जो परमेश्वर ने नहीं दिया। उनका उदाहरण भ्रमित करने वाला है, उनका प्रभाव भ्रष्ट करने वाला है। वे संसार में ज्योति नहीं हैं, क्योंकि वे धर्म के सिद्धांतों का पालन नहीं करते।

मनुष्य उस प्रकाश की उपेक्षा करके, जो वह उन्हें भेजता है, ईश्वर के प्रति इससे बड़ा विश्वासघात नहीं कर सकते। जो ऐसा करते हैं, वे अज्ञानी लोगों को गुमराह करते हैं, क्योंकि वे झूठे मार्गचिह्न स्थापित करते हैं। वे निरंतर शुद्ध सिद्धांतों को विकृत करते रहते हैं...

"पवित्र शास्त्र के शब्दों में हमें स्पष्ट रूप से बताया गया है कि यहूदी राष्ट्र पर उजाड़ क्यों आया। उनके पास महान ज्योति, प्रचुर आशीर्ष और अद्भुत समृद्धि थी। परन्तु वे अपने सौंपे गए दायित्व के प्रति निष्ठावान नहीं रहे। उन्होंने प्रभु की दाख की बारी की निष्ठापूर्वक देखभाल नहीं की, न ही उसके फल उसे अर्पित किए। वे ऐसे व्यवहार करते रहे मानो परमेश्वर ही नहीं, और इसलिए विपत्ति ने उन्हें आ घेरा।" Manuscript Releases, खंड 14, 343-345.

इस्राएल का मानना था कि उनके इतिहास की शुरुआत में परमेश्वर ने उन्हें चुन लिया था, इसलिए वे सदा उसके चुने हुए लोग बने रहेंगे। और भी बुरा यह कि वे यह भी मानते थे कि क्योंकि वे उसके चुने हुए लोग हैं, वह उनका सम्मान करेगा, जबकि वे स्वयं उसे आदर देने से इनकार करते थे। भविष्यवाणी के अनुसार वे उसके चुने हुए लोग थे, जब तक कि उन्हें त्याग नहीं दिया गया; परन्तु वे कभी भी वैसी प्रजा नहीं बने, जैसी परमेश्वर चाहता था। चुनी हुई प्रजा की धार्मिकता इस बात से निर्धारित नहीं होती कि वे अपने बारे में क्या सोचते हैं। प्राचीन इस्राएल सातवें दिन के एडवेंटिस्ट चर्च का प्रमुख उदाहरण है; पर जब यह गलत धारणा स्वीकार की जाती है कि वे संसार के अंत में एक लाख चवालीस हज़ार का प्रतिनिधित्व करते हैं, तब लाओदीकिया की अंधता प्रकट होती है, जैसी प्राचीन इस्राएल की थी। एडवेंटवादी यह मानते और सिखाते हैं कि वे संसार के अंत में परमेश्वर की शेष प्रजा हैं, इसके विपरीत स्पष्ट प्रमाण होने पर भी।

जैसे-जैसे हम अनुग्रहकाल के अंत के निकट आते हैं, लाओदीकियाई लोगों के लिए संदेश उतना ही अधिक गंभीर और सीधे-सपाट होना चाहिए। यदि उस झूठी पूर्वधारणा को छोड़कर सत्य को नहीं अपनाया जाता, तो हारून, यारोबाम और 1863 के उदाहरण परंपरा और रीति-रिवाज की आड़ में छिप जाते हैं। अनुग्रहकाल का अंत बहुत निकट है; अब उस आड़ में और नहीं छिपा जा सकता।

और न्याय यह है कि प्रकाश संसार में आया है, और मनुष्यों ने प्रकाश की अपेक्षा अंधकार को अधिक प्रेम किया, क्योंकि उनके कर्म बुरे थे। क्योंकि जो कोई बुराई करता है, वह प्रकाश से घृणा करता है और प्रकाश के पास नहीं आता, ताकि उसके कर्म धिक्कारे न जाएँ। यूहन्ना 3:19, 20.

एडवेंटिज़्म में हुए धर्मत्यागों का इतिहास परमेश्वर के भविष्यसूचक वचन में दर्शाया गया है। यह एक भविष्यसूचक वास्तविकता है। इसका पहला प्रमाण प्राचीन इस्राएल है। प्राचीन इस्राएल का इतिहास निरंतर और बढ़ते हुए धर्मत्याग का इतिहास है, और फिर भी बाइबल और भविष्यवाणी की आत्मा सिखाते हैं कि प्राचीन इस्राएल आधुनिक इस्राएल का प्रतिरूप है। यह जितना दुःखद है, वर्तमान समय में इस सत्य को समझना इससे पहले कभी इतना महत्वपूर्ण नहीं रहा। यीशु मसीह के प्रकाशितवाक्य के साथ जो उद्घाटित हो रहा है, वह यह तथ्य है कि प्रोटेस्टेंटवाद के सींग के रूप में एडवेंटिज़्म का इतिहास, गणतंत्रवाद के सींग के इतिहास के समानान्तर चलता है। दोनों सींग एक-दूसरे के लिए दूसरे गवाह के रूप में ठहरते हैं, और गवाहों में से किसी एक को ठीक से देखने से इन्कार करना, साथ ही दूसरे गवाह को पहचानने जाने से भी रोक देता है।

हारून, यारोबाम और 1863 की रेखाएँ आधुनिक आत्मिक इस्राएल की शुरुआत को दर्शाती हैं, और ऐसा करते हुए वे गणतांत्रिक सींग की शुरुआत को भी दर्शाती हैं। तीसरे स्वर्गदूत का संदेश पशु का चिन्ह ग्रहण करने के विरुद्ध एक चेतावनी है। सबसे पहले रविवार का कानून संयुक्त राज्य अमेरिका पारित करता है, और फिर वही पूरे संसार को भी वैसा ही करने के लिए बाध्य करता है।

"विदेशी राष्ट्र संयुक्त राज्य अमेरिका के उदाहरण का अनुसरण करेंगे। यद्यपि संयुक्त राज्य अमेरिका पहल करेगा, फिर भी वही संकट संसार के सभी भागों में हमारे लोगों पर आएगा।" टेस्टिमोनीज़, खंड 6, 395.

रविवार के कानून के संकट से जुड़ी भविष्यसूचक सचाइयाँ संयुक्त राज्य अमेरिका के कार्य से अलग नहीं की जा सकतीं। प्रकाशितवाक्य तेरह का पृथ्वी का पशु बाइबल की भविष्यवाणी का छठा राज्य है, जो यशायाह तेईस के अनुसार सत्तर भविष्यसूचक वर्षों तक राज्य करता है। वही पृथ्वी का पशु है जिसके दो सींग हैं। उन दो सींगों के संबंध से जुड़े सत्य अब खोले जा रहे हैं, परन्तु केवल उनके लिए जो यह समझना चुनते हैं कि यीशु, किसी बात की शुरुआत को उसके अंत को दर्शाने के लिए प्रयोग करके, यीशु मसीह के प्रकाशितवाक्य की मुहर खोलने का कार्य सम्पन्न करते हैं।

संयुक्त राज्य अमेरिका 1798 में बाइबल की भविष्यवाणी के छठे राज्य के रूप में आरंभ हुआ, और अगले पैंसठ वर्षों में, इतिहास में साथ-साथ आगे बढ़ने वाले वे दो सींग ऐसे परिप्रेक्ष्य में रखे गए जिन्हें पहचाना जा सकता था, परंतु केवल उनके द्वारा जो देखने को इच्छुक हैं। यशायाह अध्याय सात में उल्लिखित पैंसठ वर्ष 742 ईसा पूर्व से शुरू होकर 677 ईसा पूर्व में समाप्त हुए। 1798 से 1863 तक वे वर्ष पुनः दोहराए गए। वे पैंसठ वर्ष दोनों सींगों में संकट की एक प्रक्रिया को चिह्नित करते हैं।

1863 तक, यशायाह तेईस के भविष्यसूचक 'एक राजा के दिनों' की प्रारंभिक अवधि समाप्त हो चुकी थी, और ऐसा होने से 'एक राजा के दिनों' की अंतिम अवधि के भविष्यसूचक मार्गचिन्ह स्थापित हो गए। यशायाह तेईस के प्रतीकात्मक सत्तर का अंत पहले पैंसठ वर्षों द्वारा चित्रित किया गया है। 1863 से 1989 में 'अंत के समय' तक का काल, लाओदीकियाई एडवेंटिस्ट कलीसिया का काल है, जो मिलराइट आंदोलन से आरंभ हुआ और एक लाख चवालीस हजार के आंदोलन पर समाप्त होता है। अंत के काल को समझने के लिए हमें प्रारंभ के काल को समझना होगा। एडवेंटिज़्म यह नहीं कर सकता, क्योंकि उसकी शुरुआत मूसा की शपथ को अस्वीकार करने से चिन्हित है, जो ठीक उन्हीं पैंसठ वर्षों की पहचान करती है, जो एडवेंटिज़्म और संयुक्त राज्य अमेरिका की शुरुआत और अंत का प्रतिनिधित्व करते हैं।

इसी कारण, और यह अत्यंत महत्वपूर्ण कारण है, इस लेख ने एक भविष्यसूचक तथ्य स्थापित करने का प्रयास किया है, जिसे अब यहूदा के गोत्र का सिंह उजागर कर रहा है। तथ्य यह है कि यदि आप यह मानने को तैयार नहीं हैं कि सेवेथ-डे एडवेंटिस्ट कलीसिया सदा से लाओदीकिया की स्थिति में रही है, तो आप तर्कसंगत रूप से एडवेंटिज़्म के इतिहास का ठीक रीति से विभाजन नहीं कर सकते, और एडवेंटिज़्म के इतिहास का ठीक रीति से विभाजन किए बिना आप गणतंत्रवाद के सींग की सही पहचान करने में असमर्थ हैं।

क्योंकि यदि प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के ज्ञान के द्वारा वे संसार की अशुद्धियों से बच निकले हों, और फिर उनमें फँसकर पराजित हो जाएँ, तो उनकी पिछली दशा पहली से भी बदतर हो जाती है। क्योंकि उनके लिए यह अच्छा था कि वे धार्मिकता का मार्ग न जानते, बजाय इसके कि उसे जान लेने के बाद उन्हें दी गई पवित्र आज्ञा से मुड़ जाएँ। पर उनके साथ वही हुआ जैसा सच्ची कहावत में कहा गया है: 'कुत्ता अपने ही उल्टी की ओर फिर लौट गया'; और 'धोई हुई सूअरनी फिर कीचड़ में लोटने लगी।' 2 पतरस 2:20-22.